भजन

भजन (विदाई गीत)

तर्ज :– याद में तेरी जाग जाग के हम

खतम होती मिलन की ये घड़ियाँ, जाते–जाते प्रणाम करते है
प्राणों के प्यारे साथ जी मेरे, आपसे हम विदाई लेते हैं

1.) कैसी मांगी थी हमने ये दुनियाँ, जिसने आपस में यूँ जुदा कीना
इक धनी और इक वतन अपना, सब गुलों से चमन जुदा कीना
भीगी पलकों में प्यार ले कर के, इक दूजे से हम बिछड़ने लगे हैं
खतम होती मिलन की..

2.) कितनी खुशियाँ, उमंगे लेकर के, साथ आपस में आके मिलते है
आतमा से तो एक है हम तुम, गम जुदाई का फिर भी सहते हैं
अर्श में कब जगायेंगे प्रीतम, इंतजार उस घड़ी का करते हैं
खतम होती मिलन की.

3.) सतगुरु ने रचा के भंडारे, साथ का ये मिलन कराया हैं
माया से हमको तो छुड़ा करके, सनमंध धाम का बताया हैं
चरणों में पिया के सुरता रहे, अर्जी दिन रात ये ही करते हैं
खतम होती मिलन की.